



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 348]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, अगस्त 11, 1983/आषाढ 20, 1905

No. 348] NEW DELHI, THURSDAY, AUGUST 11, 1983/SRAVANA 20, 1905

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या को जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate
compilation

वित्त मंत्रालय

(आधिकार कार्य विभाग)

(स्टाक एवमचेंज प्रभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 11 अगस्त, 1983

का. आ. 574(अ) :—यतः, केन्द्रीय सरकार को कलकत्ता स्टाक एवमचेंज एमोरीज़ेशन लि. कलकत्ता की ओर से इस आशय का एक लिखित अनुरोध प्राप्त हुआ है, कि उसके द्वारा बनाई गई उप-विधियों में संशोधन कर दिया जाए।

अन: अर, प्रतिभूति संविवा (विनियमन) अधिनियम, 1956 (1956 का 42) की धारा 10 की उप-धारा (1) के द्वारा प्रदत्त धक्कियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्वारा कलकत्ता स्टाक एवमचेंज की उप-विधियों में, नीचे दी गई अनुसूची में विनिर्विष्ट संशोधन करती है और उस धारा की उप-धारा (4) के परन्तुक के अनुसरण में, केन्द्रीय सरकार, व्यापार के लिए तथा विनिर्विष्ट शेयरों के सम्बन्ध में किए गए संविदाओं के अधिलम्ब अनुपालन के लिए सूचिश देने के लिए जाए। अनुसूचा, उप-विधियों में उक्त संशोधनों के पूर्व प्रकाशन की शर्त से भी अभिमंत्रित प्रदान करती है।

अनुसूची

कलकत्ता स्टाक एवमचेंज एसोसिएशन लिमिटेड, कलकत्ता की उप-विधियों में :

(1) उप-विधि 52 में, वर्तमान खण्ड (2) के बन्त में निम्नलिखित परन्तुक जोड़ दिया जाएगा,
अर्थात् :—

“किस्तु यह व्यवस्था भी की गई है कि ऐसे शेयरों के मामले में जिनको समिति द्वारा ‘विनिर्विष्ट शेयर’ अभिहित किया गया है, सुप्रदर्शी तथा अदायगी की अवधियां समिति द्वारा प्रत्येक मामले में 14 दिन और आगे तक इस तरह से बढ़ाई तथा स्थिगत की जा सकेंगी कि कुल मिला कर वह अवधि संविदा की तारीख से 90 दिन से ज्यादा की न हो जाए।”

(2) उप-विधि “57” के बाद, एक नई उप-विधि “57-क” जोड़ दी जाएगी :

“विनिर्विष्ट शेयरों में सौदे

57-क. जब तक समिति द्वारा अन्यथा निर्धारित न किया जाए “विनिर्विष्ट शेयरों” में निम्नलिखित रीति से सौदे पूरे किए जाएंगे।

- (क) समस्त सौदों का निपटान हर 14 दिनों के बाद, जिसे इसमें इसके पश्चात् “निपटान अवधि” कहा गया है सुप्रदर्शी तथा अदायगी के द्वारा अथवा उस रीति से किया जाएगा जिसका निर्धारण समिति द्वारा उपर्युक्त रीति के अतिरिक्त अथवा उसमें संशोधन करते हुए किया जाए।
- (ल) समिति ग्रत्येक निपटान अवधि के सम्बन्ध में अग्रिम आधार पर प्रथम तथा अन्तिम व्यापार दिवस निश्चित करेगी।
- (म) सौदे हाजिर गृप्तर्द्धगी अथवा वर्ती सप्तर्द्धगी अथवा विशेष सप्तर्द्धगी अथवा व्यवस्थापन के लिए किए जा रखेंगे किन्तु सौदा करते समय जब तक अन्यथा अनुबन्धिता न किया जाए तब तक समस्त सौदों को तत्सामान्यिक व्यवस्थापन के लिए किए गए सौदे माना जाएगा।
- (घ) निर्धारित व्यापारिक एकक अथवा उम्के गृणिनों में भिन्न एककों के सौदों को उप-विधि 52 (2) में द्यथा परिभासित व्यवस्था के अनुसार दस्ती गृप्तर्द्धगी के सौदों के रूप में माना जाएगा।
- (ङ) जो सौदे चालू तथा अन्वर्तों निपटान अवधियों के आगे तक की अवधियों के लिए किए गए होंगे वे शून्य सौदे माने जाएंगे।
- (क) एक निपटान अवधि से दूसरी निपटान अवधि में अग्रेणीत सौदे कार्यकारी निदेशक द्वारा अथवा उम्की अनपस्थिति में सचिव द्वारा किसी भी प्रतिभूति के लिए निश्चित किए गए पूरक मूला पर किए गए सौदे माने जाएंगे।
- (छ) निपटान अवधि के दौरान किए गए सौदों को क्रय अथवा विक्रय के द्वारा छन्नित किया जा सकेगा अथवा अगली विपटान अवधि में आगे तक ले जाया जा सकेगा। अन्य समस्त सौदे जो बकाया रहे उनको इस प्रथोजन के लिए निश्चित दिनों पर सप्तर्द्धगी तथा अदायगी द्वारा पूरा करना आवश्यक होगा।
- (ज) इन उप-विधियों और विनियमों के समस्त उपबन्ध, जो इस समय गमाशोधित प्रतिभूतियों के सौदों निपटारे पर लाग हैं और जो उपर्युक्त व्यवस्था के विरुद्ध नहीं हैं, वे “विगिर्दृष्ट शेयरों” में सम्पन्न सौदों के निपटारे की व्यवस्था पर ग्रथोचित परिवर्तनों सहित लाग होंगे।
- (३) उप-विधि 75 के स्पष्ट (स) के बाद एक नया स्पष्ट (ग) जोड़ दिया जाएगा, अर्थात् :—
- “(ग) यदि समिति की राय में किसी प्रतिभूति में उपर्युक्त विनिर्दृष्ट किसम की कोई आपात स्थिति उत्पन्न हो गई हो, तो वह एक विशेष मंकल्प के द्वारा विक्रेता द्वारा क्रेता को दिए जाने वाले विलम्ब छूट प्रभारों का विनियमन कर सकेगी।”
- (४) उप-विधि 322 के स्पष्ट (१) में “एकमचौंज का (आफ दी एकसचौंज)” शब्दों के बाद निम्नलिखित शब्द जोड़ दिए जाएंगे, अर्थात् :—

“अथवा जिसमें दावेदार ने गा तो स्वयं अदायगी न की हो, या किसी भी प्रतिभूति में सम्पन्न सौदों के सम्बन्ध में देय माजिंग के अपदार्जन के मामले में व्यतिक्रमी के माथ अवैध रूप से तालमेल जोड़ दिया हो।”

[एफ. मंख्या 2/7/एम. ई./83]
नीतिश सन गूर्हा, संयुक्त मण्डल

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Economic Affairs)

(Stock Exchange Division)

NOTIFICATION

New Delhi, the 11th August, 1983

S.O. 574(E).—Whereas the Central Government has received a request in writing from the Calcutta Stock Exchange Association Limited, Calcutta that the bye-laws made by it may be amended,

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 10 of the Securities Contracts (Regulation) Act, 1956 (42 of 1956), the Central Government hereby makes the amendments to the bye-laws of the Calcutta Stock Exchange Association Limited, Calcutta specified in the Schedule below, and in pursuance of the proviso to sub-section (4) of that section the Central Government, in the interest of the trade, and to facilitate performance of contracts in respect of specified shares without delay hereby dispenses with the condition of previous publication of the said amendments to the bye-laws.

SCHEDULE

In the bye-laws of the Calcutta Stock Exchange Association Limited, Calcutta,—

(1) in Bye-law 52, at the end of the existing clause (ii) the following proviso shall be added, namely,—

“Provided however that in the case of such shares as may be designated by the Committee as “specified shares”, delivery and payment may be extended or postponed by the Committee by further periods of 14 days each, so that the overall period does not exceed 90 days from the date of the contract.”

(2) after Bye-law 57, a new bye-law 57A shall be added, namely,—

“Bargains in Specified Shares

57A. Unless otherwise determined by the Committee, bargains in specified shares will be performed in the following manner :

- (a) All bargains shall be settled every fourteen days hereinafter called a Settlement Period by delivery and payment or as the Committee may from time to time prescribe in addition thereto or in modification thereof.
- (b) The Committee shall fix in advance the first and last business day for each settlement period.
- (c) The bargains may be for spot delivery or for hand delivery or for special delivery or for the settlement but unless otherwise stipulated when entering into the bargain, all bargains shall be deemed to be for the current settlement.
- (d) Bargains in other than the prescribed trading unit or multiples thereof shall be deemed to be for hand delivery as defined in Bye-law 52 (ii).
- (e) Bargains made for a period beyond the current and ensuing settlement periods shall be void.
- (f) Bargains carried over from one settlement to another shall be at the making-up price fixed for any security by the Executive Director or in his absence by the Secretary.
- (g) Bargains entered into during the settlement period may be closed by purchase or

sale or carried over to the next settlement period with payment of charges. All other bargains which remain outstanding must be performed by delivery and payment on the days fixed for the purpose.

- (h) All the provisions in these bye-laws and regulations which are at present applicable to the settlement of bargains in cleared securities and which are not in conflict with the above will apply mutatis mutandis to the settlement of bargains in specified shares."

(3) after clause (b) of Bye-law 75, a new clause (c) shall be added, namely,—

"(c) if in the opinion of the Committee an emergency of the type referred to above has arisen in any security it may be a special resolution regulate the backwardation charges payable to the buyer by the seller."

(4) in clause (i) of Bye-law 322, after the words "of the Exchange", the following words shall be added, namely,—

"or in which the claimant has either not paid himself or colluded with the defaulter in the evasion of margin payable on bargains in any security".

[F. No. 2/7|SE|83]

N. K. SENGUPTA, Jt. Secy.

